

- BHATT.** 14.55.: उच्क्ष्वास दोना; **DR.** 6.25.: मुज्जर मु-
ज्जर व्यालवद् उच्क्षूसन्तः
c. नि suspirare, gemere. **BHATT.** 6.34.: न्यश्वसोचा "य-
तम् मुज्जः"; **MAH.** 1.5901.; v. sq.
c. नि praef. वि id. N. 18.7.: विनिश्वस्य बङ्गशो रुदि-
त्वाच; **MAH.** 3.14759.
c. निस् id. H. 1.49.: निःश्वसन् दोनमानसः; **R. SCHL.** II.
23.2.
c. निस् praef. वि id. **DR.** 5.25.
c. परा concedere, committere. **MAH.** 3.17011.: त्वयि ...
पराश्वस्य ब्राह्मणस्या 'भिराधनम्'
c. वि confidere. **HIT.** 24.9.: यो विश्वसिति शत्रुघ्नः; **R. II.**
Schl. 12.67. — **CL. I. P.** **MAH.** 3.17310.: कस् तस्य वि-
श्वसेत्; 5.453.: मयि विश्वसेः — विश्वस्त् confidens,
securus, liber a metu. **H. I.** 50.2.25. — *Caus.* confidere
facio, securum reddo. **HIT.** 79.5.121.9.
2. श्वस् cras. N. 28.25. (Lat. *cras*, mutato *o* in *r*, v. gr.
comp. 20. 392.)
श्वसन् I. m. ventus. **AM.** II. n. 1) spiratio, respiratio.
2) gemitus.
श्वस्तन् (f. इ, a 2. श्वस् s. तन्) crastinus. (Lat. *crastinus*.)
श्वापद् m. (ut mihi videtur, **BAH.** e श्वन् canis producto म्र-
cf. श्वादन्त apud Wils. - et पद् pes) bestia rapax in uni-
versum. N. 15.18.
श्वास m. (r. श्वस् s. म्र) spiritus, halitus. **SA.** 5.17.
श्वि 1. p. श्वयामि, praet. mltf. म्रश्वयिषम् (gr. 403.), म्र-
श्वम् (gr. 416.) et म्रश्वियम् (gr. 423.), praet. redupl.
शिश्वय, शिश्वाय vel श्रुशक, श्रुशाक, a correptâ formâ
म्र (PAN. VI. 1.30.), prec. श्रूयासम्; pass. श्रूये (gr.
426.), part. श्रून्. 1) crescere, accrescere, tumescere.
RIGV. V. 74.6. (v. Westerg.): ते स्वेन शक्षसा श्रूश्वुः,
producto ऊ in syll. redupl., ita श्रूश्वस् qui crevit, tur-

gidus, magnus. **RIGV.** 64.15.: श्रूश्ववांसम्. — *Caus.*
facere ut crescat, augere. **RIGV.** 54.7.: श्रूश्वत्. (Lat.
crescere, mutato *o* in *r*, sicut in *cras* = श्वस्, v. gr. comp.
20.; *eu-mulus*, nisi pertinet ad चिः; gr. κύω, κύημα,
κύμα, κυῖσκω, κύτος, v. श्रून्यः fortasse κίων e κρίων;
cf. Benfey II. 164. sq. Huc etiam traxerim germ. vet.
wi-t amplus, latus, vastus = श्रीत, sicut regularis partici-
pii pass. forma sonaret, abjectâ consonante initiali, si-
cut in *wi*z albus, v. श्रीत. Cf. etiam hib. *cinneas* «growth,
increase», *cinneachdin* id. Fortasse lat. *coma*, gr. κόμη
e *cu-ma*, κύ-μη a crescendo dicta (v. रोमन्, शिरोरुह,
वृध्), nisi pertinent ad क, v. केश.)
c. वि crescere, tumescere, se dilatare, extendere, diffund-
dere. **RIGV.** 92.12.: व्यश्वैत् (उषा:); 113.15.: प्रथमो
'षा व्यश्वैत्.'

श्वित् 1. a. album esse. (Fortasse primitive splendere, v.

श्रुभ्र, रजत् et cf. lith. *szwēciu* - euphon. pro *szwētiu* -
luceo, infin. *szwēs-ti* e *szwēt-ti*; fortasse *swēta-s* in. mundus a lucendo dictum sicut लोकः; slav. *svit-a-ti* illuces-
cere, *svjet lux*, mundus, नोर्मुस; lith. *kaičiu*, euphon.
pro *kaitiu*, ad ignem appono, *kaitiu* calefacio, *kais-tu*
calefio e *kait-tu*, praet. *kaitau*; v. श्रीत, श्विन्दू.)

श्विन्दू 1. a. (scribitur श्विदू) i. q. श्वित्. (Cf. श्वित्, चन्दू.
Huc vel ad चन्दू trahi potest island. vet. *hita*, *hiti*
fervor, calor, *heit* fervidus, germ. vet. *hiza*, *heiz*, no-
strum *Hitze*, *heiss*. Ad चन्दू etiam trahi potest lat. *ca-
leo*, gr. κηλεός, mutato *d* in *l*.)

श्रीत् albus. (Vid. श्वित्, श्विन्दू et cf. goth. *hweit-s* albus,
Them. *hweita*; fortasse *hwaitei* triticum a colore dictum;
germ. vet. *hui*z albus, saepius ऊz, sax. vet., anglo-sax.
et island. vet. *hvit*, nostrum *weiss*; lith. *kwēty-s*, gen.
kwēčio triticum.)

प

षट् पद् m. (**BAH.** e षष् sex et पद् pes) id.

षण्ठ m. eunuchus. **IN.** 5.50.

षष् (in initio comp. et nom. acc. षट्, v. gr. 74. et 256.)

षट् v. षष् (gr. 74. et 256.).

षट् चरण् m. (sex pedes habens, **BAH.** e षष् et चरण)

apis. **SAK.** 15.2. *Vid.* sq.